जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

अक्तूबर 2024

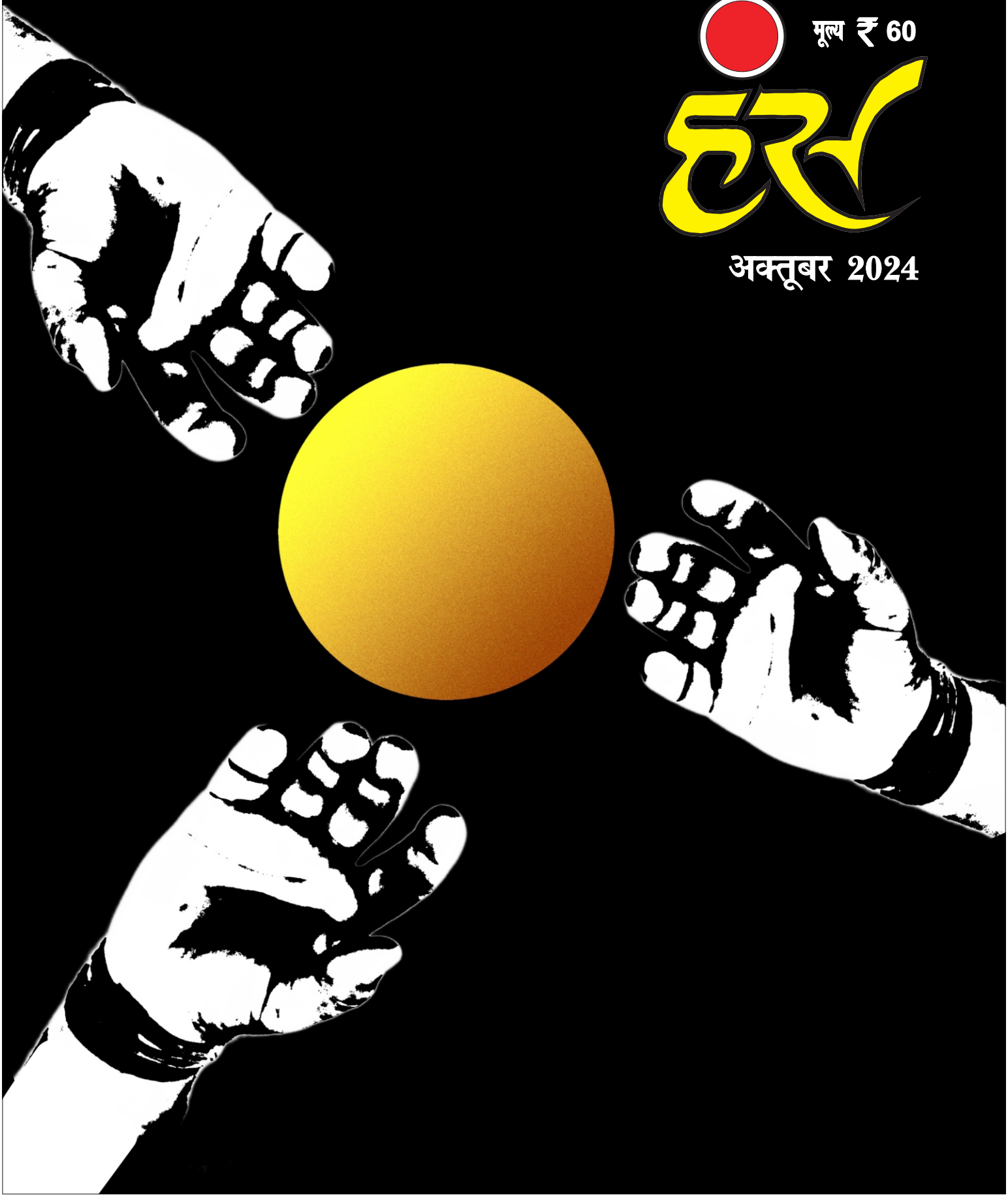

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
सोशल मीडिया
शैलेश गुप्ता
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
मार्टिन जॉन, सिद्धेश्वर, विकेश निझावन
शैलेन्द्र सरस्वती

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अक्तूबर, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-456 वर्ष : 39 अंक : 3 अक्तूबर 2024

आवरण : अंतरिक्ष

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. और अब लेबनान : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

मुड़-मुड़ के देख
11. मुकाम : पंकज बिष्ट
('हंस', दिसंबर 1986)

आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
16. 'मैं गुलाबी फेमिनिस्ट हूं'-2 : ममता कालिया
(ममता कालिया से प्रत्यक्षा का संवाद)

अभी दिल्ली दूर है
24. अक्षरों का नहीं, संख्याओं का शहर है दिल्ली : अब्दुल बिस्मिल्लाह

कहानियां
32. किरचें : जितेन ठाकुर
36. खैबर दर्रा : पंकज सुबीर
46. फाटक : श्रद्धा श्रीवास्तव
60. मौन्टियेल की विधवा : गाब्रिएल गार्सीया मार्केस (स्पेनिश कहानी)
(अनुवाद : मंजुला वालिया)

हंस युवा कथा सम्मान से सम्मानित
49. पूफॉक, मेरे दिल के वीराने में बसो : किंशुक गुप्ता
54. चीजों के बिगड़ते आकार : उज्जवल देशवाल

लघुकथा
30. रंजना जायसवाल
86. चंद्रेश कुमार छतलानी

कविताएं
58. चाहत अन्वी

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य
64. आधुनिक दर्शन की विकास यात्रा-2 : अशोक कुमार

लेख
68. राजेन्द्र यादव की वैचारिकी : वीरेन्द्र यादव

ग़ज़ल
72. अनिरुद्ध सिन्हा, विकास
75. संजय कुमार 89. पीयूष अवस्थी

परख
73. यथार्थ और जीवन दर्शन का कथा रूप : भालचन्द्र जोशी
76. वर्जनाओं को तोड़ता एक रचनाकार शिव कुमार 'शिव' : सुधांशु गुप्त
80. लघुकथा में प्रयोग की सार्थकता : भगीरथ
82. ग्लोबल गांव में बेचैन मन की कहानियां : अरुण आदित्य
84. स्त्री संवेदना की नई दृष्टि : शुभम मोंगा

शब्दवेधी/शब्दभेदी
87. हिंदू-मुस्लिम विवाह की परिणति : तसलीमा नसरीन

साहित्यनामा
90. पांडे कौन कुमति तोहि लागी : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
96.

और अब लेबनान

हर यहूदी आतंकवादी नहीं होता, लेकिन एक देश के तौर पर इज़राइल निश्चित रूप से है! उसी तरह से उनकी सेना भी, और सबसे बढ़कर तो दुनिया भर में कुख्यात उनका मोसाद. 1948 के अरब-इज़राइली युद्ध के उपरांत एक लाख से अधिक शरणार्थी फ़िलिस्तीन से उखड़कर लेबनान में आ बसे थे. 1975 तक इनकी संख्या बढ़कर तीन लाख हो गई थी. फ़िलिस्तीनी लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन, जिसका गठन 1964 में हुआ था, ने दक्षिणी लेबनान में एक अनाधिकारिक राज्य बसा लिया था. पश्चिमी जगत की मिलीभगत से फ़िलिस्तीनियों की भूमि हड़पने वाले आतताई इज़राइल और फ़िलिस्तीनियों के हक में लड़ते पी.एल.ओ. के बीच लगातार झड़पें चलती रहीं. शांति और समझौते बनते-बिगड़ते रहे. 1975 में लेबनान में अल्पसंख्यक शियाओं और बहुसंख्यक सुन्नियों के बीच गृह युद्ध छिड़ गया जो पंद्रह वर्षों तक चला. इस मूर्खताजन्य त्रासदी में अवसर तलाशते इज़राइल ने यू.के. में अपने एक राजनयिक पर हुए हमले को बहाना बना 6 जून 1982 को लेबनान पर चढ़ाई कर दी. अचरज की बात यह है कि उनके राजनयिक की जान लेने की कोशिश अबू निडाल संगठन ने की थी जो कि पी.एल.ओ. का शत्रु था. लेकिन मेमने को चबा डालने के लिए हैवान को बस एक बहाना चाहिए होता है. लेबनान पर इस चढ़ाई के उपरांत ही प्रतिरक्षार्थ हिज़बुल्लाह का जन्म हुआ जो शिया समुदाय से ताल्लुक रखता था और इसे ईरान से भी समर्थन मिलता रहा. इस क्षेत्र में इज़राइल की बढ़ती गुंडागर्दी और वहां के मूल बाशिंदों का पश्चिम के हाथों बार-बार छले जाने की वजह से इसने इन दोनों शक्तियों से कभी समझौता न करने की कसम खा ली थी. इज़राइल के दबाव और हिज़बुल्लाह की गतिविधियों से चोट खाते संयुक्त राज्य ने भी इसे 1997 में एक आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया. पिछले अक्तूबर से आरंभ हुए हमास-इज़राइल टकराव में हिज़बुल्लाह भी कूद पड़ा था.

17 से 18 सितंबर तक पेजर और वॉकी-टॉकी में विस्फोटक भरकर मोसाद द्वारा उन्हें हिज़बुल्लाह के सदस्यों तक पहुंचा दिया गया और फिर रेडियो या माइक्रोवेव के माध्यम से एक ही वक्त धमाका करा दिया गया, जिसमें पचासेक लोग मारे गए और 2800 से अधिक घायल हैं. उनकी ऐयारी की तारीफ करते भले ही नेतन्याहू के तलवे चाटने वाले पत्रकारों और नेताओं का मुंह न थके लेकिन निश्चित रूप से यह एक निहायत कायरता भरा कदम ही कहलाएगा जैसे कि आमतौर पर आतंकवादी हमले होते हैं. ऐसे धोखे के विस्फोटों को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार विशेषज्ञों के एक समूह ने भी अंतरराष्ट्रीय कानूनों के भयानक उल्लंघन की संज्ञा दी है.

बेशक यह कहा जा सकता है कि युद्ध और प्रेम में सब जायज हैं. जबकि गौर से देखें तो यह तर्क ही अपने आप में बेहद कमजोर और अविश्वसनीय रूप से हिंसक है. खासतौर पर उस देश के लिए जिसने अपनी सच्ची-झूठी बहादुरी के किस्से दुनियाभर में फैला रखे हों, और जिसकी पीठ पर अमेरिकी प्रशासन अपने आधुनिकतम संसाधनों, सैटेलाइटों और साजोसामान सहित खड़ा हो, उससे ऐसे टुच्चेपन की उम्मीद नहीं की जा सकती थी. सच्चाई यह है कि कुल मिलाकर इज़राइल के वर्तमान राष्ट्राध्यक्ष बेंजामिन नेतन्याहू एक टुच्चे नेता हैं जिन्हें उनकी औकात कुछ हद तक बराक ओबामा ने दिखाई थी और जो अपने भाई योनाथन नेतन्याहू की एंटेबे में दी गई अकेली शहादत भुनाते तथा विभक्तिकरण की तरकीबें आजमाते इज़राइली सत्ता के शिखर पर सोलह वर्षों